Dr. Premlata
Department
of History

भारत छोड़ो आन्दोलन

भारत छोड़ो आन्दोलन जिसे हम अगस्त क्रांति के नाम से अभिहित करते हैं, भारतीय जनता की वीरता और लड़ाकूपन का अद्वितीय मिसाल है। इस आन्दोलन की परिस्थितियों को जानने के लिए हमें महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हुये सविनय अवज्ञा आन्दोलन के बाद के घटनाक्रमों पर विहंगम दृष्टिपात करना होगा। महात्मा गाँधी ने वस्तुतः भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को जनाधार प्रदान किया था और देश के असंख्य लोगों में शोषण से मुक्ति की चाहत पैदा की थी। शोषण से मुक्ति को महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने कई कार्यक्रमों को अपनाया और देश के सभी वर्ग के लोगों को कांग्रेस को मजबूत करने का आह्वान किया गया। गाँधीजी के अनुसार भारत के लोगों के शोषण का मूल कारण जमींदार एवं बिचौलिये नहीं थे। वे तो मात्र ब्रिटिश साम्राज्यवादी व्यवस्था के अंग थे। यदि भारत के लोगों को शोषण से मुक्ति दिलानी थी तो उसके लिए आवश्यक था कि कांग्रेस ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ आन्दोलन करे और इस प्रयत्न में देश के सभी लोगों को आपसी मतभेदों को भुलाकर कांग्रेस के झंडे के नीचे खड़ा हो। निसंदेह गाँधीजी ने आन्दोलन के लिए सत्याग्रह एवं अहिंसा का मार्ग अपनाया। कांग्रेस के सभी नेताओं ने उनके साथ शत-प्रतिशत सहमति जाहिर नहीं की और उन्होंने कांग्रेस को प्रगतिशील संस्था बनाना चाहा। उन्होंने जोर दिया कि कांग्रेस असंख्य गरीब जनता के उत्थान के लिए प्रयास करे और जमींदार एवं सरकार का भरपूर विरोध करे। कांग्रेस किसान एवं मजदूरों की

रहनुमाई करे। दूसरी ओर गाँधी एवं उनके समर्थक सामंजस्य एवं सद्भावना की बात करते रहे। इसी माहौल में उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत की। यह आन्दोलन अंग्रेजों के दमन के चलते असफल हो गयी और कांग्रेस के नेताओं ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्तावित संवैधानिक कदमों का स्वागत किया। कांग्रेस के प्रगतिशील एवं परिवर्तनवादी लोगों ने इस नीति की घोर भर्त्सना की और उन्होंने कांग्रेस के अन्दर ही कांग्रेस समाजवादी दल का गठन किया। इन्हीं लोगों की प्रेरणा से अखिल भारतीय किसान सभा का गठन हुआ और किसान एवं मजदूरों की चेतना को जगाने की कोशिश की गयी। महात्मा गाँधी ने महसूस किया कि किसान एवं मजदूर अपनी गुलामी की जंजीर को उखाड़ फेंकने के लिए व्याकुल हैं अतः यदि कांग्रेस को उनके अनुकूल नहीं बनाया गया तो वे कांग्रेस के नेतृत्व को मानने से इनकार कर देंगे और अपने लिए स्वतंत्र आन्दोलन खड़ा कर देंगे।

द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटेन ने भारत को बिना भारत के लोगों से सलाह मसविरा किये युद्ध में एकतरफा झोंक दिया। भारत के नेताओं ने तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की और भारत के लोगों से युद्ध का विरोध करने का आह्वान किया। इस स्थिति में भारत में सांविधानिक गतिरोध पैदा हुआ। ब्रिटिश सरकार ने इस गतिरोध को दूर करने के लिए ही क्रिप्स के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल भारत भेजा लेकिन गतिरोध समाप्त नहीं हो सका।

Premlata